

T .Y.B.A.-HINDI (G-3)
हिंदी साहित्य और भाषा

St. Mira's College for Girls, Pune

सेमिस्टर - ५	विषय कोड नं.ए - ५१७०३	कुल व्याख्यान - ४८
--------------	-----------------------	--------------------

उद्देश्य:

- छात्रों को हिंदी नाट्यविधा से परिचित कराना तथा साहित्य के इस विधा का अध्ययन कराना ।
- छात्रों को पत्रकारिता का स्वरूप और उसके विविध आयाम अवगत कराना ।
- शुद्ध हिंदी लेखन की नियमावली का ज्ञान देकर , अशुद्धियों के प्रति सचेत कराना ।
- व्यावहारिक और हिंदी पारिभाषिक शब्दों से परिचय कराना ।
- हिंदी कहावतों की जानकारी देकर छात्रों की भाषा विकसित कराना ।

युनिट १:	‘ एक और द्रोणाचार्य ’	लेखक - शंकर शेष	व्याख्यान १५
	<ul style="list-style-type: none"> • हिंदी नाट्य विधा का इतिहास, स्वरूप और विकासयात्रा • लेखक शंकर शेष जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय । • हिंदी नाट्यविधा में लेखक का स्थान निर्धारण । • लेखक की अन्य नाट्यकृतियों के परिप्रेक्ष्य में “ एक और द्रोणाचार्य ” नाटक का मूल्यांकन । 		

युनिट २	व्याख्यान १५
<ul style="list-style-type: none"> • “ एक और द्रोणाचार्य ” नाटक का अध्ययन • कथानक और पात्र – परिचय • संवाद ,भाषाशैली और उद्देश्य • नाटक में प्रस्तुत व्यंग्य 	

युनिट ३	पाठ्यपुस्तकेतर पाठ्यक्रम	व्याख्यान ०८
	<ul style="list-style-type: none"> • वाक्य शुद्धीकरण • हिंदी कहावतें - अर्थ और वाक्य में प्रयोग । • व्यावहारिक हिंदी –विविध व्यवहारों के लिए हिंदी शब्द । • पारिभाषिक शब्द – “पदनाम” के हिंदी शब्द । 	

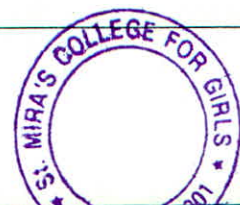


युनिट ४ पत्रकारिता	व्याख्यान १०
<ul style="list-style-type: none"> • पत्रकारिता का अर्थ और स्वरूप । • पत्रकारिता की विविध परिभाषाएँ । • पत्रकारिता के प्रकार । • पत्रकारिता का उद्देश्य । • आदर्श पत्रकार के गुण । 	

अतिथि व्याख्यान , समूहचर्चा , ग्रंथालय गतिविधि , प्रोजेक्ट	व्याख्यान १२
--	--------------

पाठ्य पुस्तक :-
“ एक और द्रोणाचार्य ” - लेखक डॉ.शंकर शेष ।

संदर्भ ग्रंथ :-
<ol style="list-style-type: none"> १. डॉ. प्रकाश जाधव (१९९०) “ रंगकर्मी नाटककार – शंकर शेष ” – प्रथम संस्करण , विकास प्रकाशन – साकेतनगर, कानपुर १४ । २. सुनिलकुमार लवटे (१९८२) – “ नाटककार शंकर शेष ” – प्रथम संस्करण , संजय प्रकाशन - शनिवार पेठ, कोल्हापुर । ३. डॉ. केशवदत्त रुवाली – (१९९२) “ मानक हिंदी ज्ञान ” – अल्मोडा बुक डेपो , अल्मोडा । ४. महेंद्र मिश्र - “ व्यावहारिक हिंदी ” शबरी संस्थान दिल्ली । ५. आलोक मेहता – (२००७) “ पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा ” सामायिक प्रकाशन – नई दिल्ली । ६. डॉ. यू. सी. गुप्ता (२००९) “ हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप ” अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस – नई दिल्ली । ७. सविता चड्ढा (२००९) “ हिंदी पत्रकारिता अध्ययन और आयाम ” दीप प्रिंटर्स- दिल्ली । ८. डॉ. अर्जुन तिवारी (२००४) “ आधुनिक पत्रकारिता ” विश्वविद्यालय प्रकाशन – वाराणसी । ९. डॉ. प्रकाश जाधव (१९८८) “ डॉ. शंकर शेषका नाटक साहित्य ” रत्नालय प्रकाशन- कानपुर - १ १०. गुलाब कोठारी (२००३) “ पत्रकारिता जनसंचार और विज्ञापन ” राजस्थान पत्रिका – केसरगढ - जयपुर ।



T . Y . B . A . - H I N D I (G - 3)
हिंदी साहित्य और भाषा

सेमिस्टर - ६	विषय कोड नं.ए - ६१७०३	कुल व्याख्यान - ४८
--------------	-----------------------	--------------------

उद्देश्य:

- हिंदी काव्यविधा का संक्षिप्त इतिहास तथा उसके विकास से छात्रों को परिचित कराना ।
- खंडकाव्य की विशेषताओं से परिचय कराना ।
- छात्रों में अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने की कला को विकसित करना ।
- व्यावहारिक और पारिभाषिक शब्दों से अवगत कराना ।
- जनसंचार माध्यमों का सामान्य परिचय कराना ।

युनिट १:	खंडकाव्य - 'भूमिजा' कवि नागार्जुन	व्याख्यान १५
----------	-----------------------------------	--------------

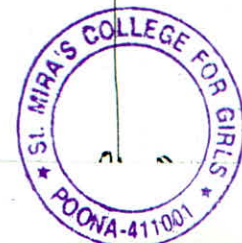
- हिंदी काव्यविधा का इतिहास ।
- उसकी विकासयात्रा से परिचय ।
- "खंडकाव्य" विधा की विशेषताओं का परिचय ।
- कवि नागार्जुन के व्यक्तित्व और कृतित्व का ज्ञान ।
- हिंदी काव्यविधा में नागार्जुन का स्थान ।

युनिट २		व्याख्यान १५
---------	--	--------------

- खंडकाव्य का अध्ययन और अनुशीलन
- कवि नागार्जुन के अन्य खंडकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में उनके 'भूमिजा' खंडकाव्य ।
- प्रस्तुत काव्य की विशेषताएँ
- "भूमिजा" की भाषा शैली, चरित्र - चित्रण और उद्देश्य ।

युनिट ३	पाठ्यपुस्तकेतर पाठ्यक्रम	व्याख्यान १०
---------	--------------------------	--------------

- अनुवाद - अर्थ, आवश्यकता और महत्त्व ।
- अनुवाद के प्रकार
- अनुवादक के गुण
- प्रायोगिक - अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद - अभ्यास
- व्यावहारिक हिंदी शब्द - "लेखन सामग्री"
- पारिभाषिक शब्द - "बैंक" से संबंधित हिंदी शब्द ।



युनिट ४	व्याख्यान ०८
<ul style="list-style-type: none"> • जनसंचार माध्यम (सामान्य परिचय) • मुद्रित माध्यम - समाचारपत्र , पत्र – पत्रिकाएँ • इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यम - रेडियो , दूरदर्शन , संगणक और इंटरनेट • जनसंचार माध्यमों का अविष्कार • जनसंचार माध्यमों का विकास और महत्व । 	

अतिथि व्याख्यान , प्रस्तुतिकरण , गुट चर्चा और ग्रंथालय गतिविधियाँ ।	व्याख्यान १२
---	--------------

पाठ्य पुस्तक-
“ भूमिजा ” – कवि नागार्जुन

संदर्भ ग्रंथ :-
<ol style="list-style-type: none"> १. वीरेंद्र सिंह (१९९५) “ यायावर कवि नागार्जुन - मूल्यांकन” समकृष्ण प्रकाशन - म.प्र. । २. अजय तिवारी (१९९८) – “ नागार्जुन की कविता” वाणी प्रकाशन , दिल्ली । ३. “ आलोचना” त्रैमासिक -दिसंबर-२०११ “ कवि नागार्जुन-विशेष अंक” राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.दिल्ली - २ । ४.क्षेमचंद्र “ सुमन” (१९९०) “साहित्य विवेचन” –आत्माराम एण्ड सन्स-कश्मिरी गेट , दिल्ली । ५.गोविंद त्रिगुणायत –(१९६२) “ शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत ” भारती साहित्य मंदिर – दिल्ली । ६.वीरेंद्रकुमार गुप्त (१९८३) “सुबोध हिंदी व्याकरण एवं रचना ” - एस,चंद एण्ड कंपनी लि. नई दिल्ली । ७.भोलानाथ तिवारी (१९९७) “ अनुवाद- कला - ” शब्दकार प्रकाशन – दिल्ली । ८.प्रो.हरिमोहन (२००६) , “आधुनिक जन-संचार और हिंदी -बालाजी ऑफसेट नया शहादस ,दिल्ली । ९.सुधीश पचौरी (२००२) “ जनसंचार माध्यम ” बी.के ऑफसेट शहादस, दिल्ली

